आनन्द स्वामी श्री प्राणनाथ भट्ट
"गरीब"-भाई जी
'संजीवनी' के दर्पण में

प्रोफेसर (डॉ0) भूषणलाल कौल

'डी0 लिट'

आनन्द स्वामी श्री प्राणनाथ भट्ट

"गरीब"-भाई जी

आनन्द स्वामी श्री प्राणनाथ भट्ट
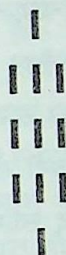
"गरीब"-भाई जी

'संजीवनी' के दर्पण में

लेखक

प्रोफेसर (डॉ०) भूषणलाल कौल

डी० लिट्

निवास–बरनाई

पो० आफिस – मुट्ठी

जम्मू (जे० एण्ड के०)

पिन : 181205

14 मई, 2002 ई०

संजीवनी के जन्म दाताः आनन्द स्वामी श्री प्राणनाथ भट्ट
'गरीब' भाई जी

संजीवनी के दर्पण में

लेखक : प्रो० डा. भूषणलाल कौल

सम्पादक : श्री चमन लाल रैणा

कम्प्यूटर ग्राफिक्स : श्री इन्द्रपाल सिंह राठौर

लेजर टाईसेटिंग : श्री मनोहर लाल सचदेवा

आवरण : भगवान अमरनाथ ज्योर्तिलिङग

शीर्षक : 'संजीवनी के दर्पण में
आनन्द स्वामी श्री प्राणनाथ भट्ट
'गरीब' भाई जी

संस्करण : 2002

मूल्य : 25.00 रुपये

मुद्रक : मीनाक्षी प्रिन्टस, 33,पांडण्व नगर,
नई दिल्ली–8

सम्पादकीय

दो शब्द

अनादि के, अनन्त के, सनातन के, भगवत्ता के असीम आयामों की समीक्षा **"संजीवनी'–काव्य भजन संग्रह"** में पूज्य आनन्द स्वामी भाई जी, श्री प्राणनाथ भट्ट 'गरीब' के मुखार–बिन्द से झर–झर प्रवाहित हुई है। आनन्द, प्रेमाप्रसाद, माधुर्य एवं अनुग्रह बरसाती हुई संजीवनी योग एवं भक्ति कला को अलंकृत करती है। संजीवनी काव्य भजन संग्रह अब तक दो संस्कर्णो 1998 एवं 2000 में प्रकाशित हुई है।

प्रोफेसर (डॉक्टर) भूषण लाल कौल (डी–लिट) काशमीर विश्व विद्यालय के हिन्दी विभाग में आर्चाय पद पर कार्यरत रह चुके हैं और अब सेवा निवृत हो चुके है। संयोगवश स्वामी श्री भाई जी प्राणनाथ भट्ट 'गरीब' प्रोफेसर भूषणलाल कौल के पूर्व छात्र भी रह चुके है। अबकी बार डाक्टर भूषणलाल कौल अपने ही पूर्व छात्र अर्थात स्वामी प्राणनाथ भट्ट 'गरीब' भाई जी के **'संजीवनी संग्रह'** के अद्‌भुत एवं अलौकिक प्रसाद का सुमधुर ताना–बाना बुन रहे हैं। डॉक्टर कौल ने संजीवनी भजन संग्रह के दर्पण में आनन्द स्वामी श्री प्राणनाथ भट्ट 'गरीब' 'भाई जी' के अस्तित्व एवं प्रभुसत्ता को निहारने का निसंदेह भरसक प्रयास किया है।

धन्यवाद !

सम्पादक्
चमनलाल रैणा
अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान
संस्थानं नई दिल्ली–29

दिनांकः 12-07-2002

आनन्द स्वामी श्री प्राणनाथ भट्ट 'गरीब' – भाई जी 'संजीवनी' के दर्पण में,

प्रोफेसर भूषण लाल कौल

अध्यात्म चिन्तन, आत्ममंथन एवं साधनात्मक जीवन –निर्वाह के दृढ़ संकल्प पर आधारित रहस्योन्मुखी संत काव्य परम्परा का ऋषि भूमि काश्मीर में अपना भव्य इतिहास है। यही हमारी सांस्कृतिक विरासत है। जिस पर प्रत्येक तत्त्व–चिन्तक बुद्धिजीवी अथवा आलौकिक आन्नद प्राप्ति हेतु साधनारत भक्तिजन को गर्व होना चाहिये।

विस्थापन के बाद कश्मीरी भक्ति काव्य की यह सम्पन्न परम्परा जो विपरीत परिस्थितयों में तनिक उपेक्षित रही, एक बार फिर जन–मानस को पूरी शक्ति और वेग के साथ झकझोरने लगी। यह हमारा रोज का अनुभव है कि सोये हुऐ आदमी की अपेक्षा जागे हुऐ आदमी को जगाना तनिक मुश्किल होता हैं। स्वर्गीय भवानी भाग्यवान पंडित (मन–पम्पोश–1998 ई०), श्री निरंजन नाथ सुमन (शशिकल– 1998 ई०), प्रोफेसर अमरनाथद्यर (दर्शुन–1993 ई०), श्रीमती बिमला रैणा (ऋषि माल्युन म्योन–१९९८ ई०),श्रीमती गिरजा कौल (गुरुदक्षण–2002 ई०), श्री काशीनाथ बाग़वान (अछरगोन्द – (2001 ई०) तथा ब्रजनाथ हाली (सोज़ि जिगरम्योन–2002 ई०) इत्यादि भक्त एवं संत कवियों का योगदान ऐतिहासिक दृष्टि से अवश्य महत्वपूर्ण है परन्तु जिस योग साधक महापुरुष ने चिन्तन और सर्जन के इस क्षेत्र में हलचल पैदा की वह है– आन्नद स्वामी प्राणनाथ भट्ट 'गरीब' जिन्हे श्रद्धालु भक्त जन भाई जी के नाम से जानते हैं। आज़कल भाई जी अपने निजीं निवास गृह–जो– सूर्य विहार

वजीर बाग, बोर्डी जम्मू में स्थित हैं, पर ही भक्त जनों के लिए उपलब्ध रहते हैं। भाई जी मूलतः कश्मीर के पुलवामा ज़िले में स्थित 'मुरन' गाँव के निवासी है। इस गाँव के निवासी कश्मीरी पण्डित अपनी बौद्धिक सम्पन्नता के कारण इतिहास प्रसिद्ध रहे हैं। कहते है इस गाँव पर देवी माँ–'ब्रारि माउज' की विशेष कृपा रही हैं। यहाँ देवी माँ स्थायी रुप से प्रतिस्थापित है अतः श्रद्धालु भक्तजनों के लिए यह पावन तीर्थ स्थान सांस्कृतिक गौरव का प्रतीक चिहन हैं। प्रकृति ने भी इस गाँव को अपनी श्री सम्पदा से पर्याप्त सुशोभित किया हैं।

माता सोऽन बटनी के गर्भ से भाई जी का जन्म 29 सितम्बर सन 1947 ई० तदनुसार अश्विन कृष्ण पक्ष चतुर्दशी के दिन के दिन जिला पुलवामा (कश्मीर) के मुरन गाँव में हुआ। इनके पिता पंण्डित काशीनाथ भट्ट इलाके के जाने माने अर्जी नवीस (याचिका लेखक) थे।

भाई जी को इनके ताऊ श्री अमर चन्द्र भट्ट, जिन्होने गृहस्थाश्रम धारण नहीं किया था, ने गोद लिया और लालन पालन करने लगे। लेकिन विधि की विडम्बना! जब भाई जी केवल छः वर्ष के थे श्री अमरचन्द्र भट्ट का आकस्मात स्वर्गवास हुआ।

प्रारम्भिक शिक्षा गाँव के स्कूल में पायी, तत्पश्चात गांधी मॅमोरियल डिग्री कालेज, श्रीनगर से बी०ए० और कश्मीर विश्वविधालय से सन् 1969-70 में एम० ए० हिन्दी की डिग्री प्राप्त की। दो वर्ष विश्वविधालय के स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग के साथ नियमित (Regular) छात्र के रुप मे संलग्न रहें। भाई जी ने सन् 1972-73 ई० में काश्मीर विश्वविद्यालय से अग्रेंजी साहित्य में एम० ए० की डिग्री प्राप्त की। शिक्षा विभाग में बुं

अध्यापक नियुक्त होने के बाद सन् 1978-79 में अध्यापक प्रशिक्षण कालेज, श्रीनगर से बी० एड० की परीक्षा भी पास की।

भाई जी के एक ज्येष्ठ भ्रातः भी थे जिनका देहान्त सन् 1985 ई० में रेक्टम केंसर से हुआ। इन का नाम था श्री भूषणलाल भट्ट इनके दुखद निधन से भाई जी के पारिवारिक जीवन पर विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ा और बडे साहस के साथ कठिन परिश्रम का व्रत लेकर भाई जी ने स्थिति को सभाला और पारिवारिक उत्तरदायित्व को निबाहाया! ज्येष्ठ भ्रातः स्वर्गीय भूषणलाल भट्ट पहले रेशम उत्पादन विभाग (सेरी कलवर विभाग) में निरीक्षक (Inspector) थे और बाद में पुलिस विभाग में कार्यालय संचालक (Office Superintendent) बनें ।

भाई जी के पिता पण्डित काशीनाथ भट्ट सचमुच एक कर्मयोगी थे। उनका देहान्त जनवरी सन् 1968 ई० में माद्य कृष्ण पक्ष नवमी के दिन बान मुहुल्ला श्रीनगर में हुआ। भाई जी का कहना है कि मृत्यु के कुछ दिन पूर्व से लगातार कहते रहे कि 'हे नेरुन छु' 'जाना है, मुझे जाना है।

सन् 1970ई० में एम० ए० हिन्दी डिग्री प्राप्त करने के बाद भाई जी को सूचना और प्रसारण मंत्रालय द्वारा दूरदर्शन प्रडयूसर का नियुक्ति पत्र मिला। आपने इसके लिये आवेदन पत्र दिया था कि आवश्यक प्रशिक्षण के लिये एक वर्ष बेंगलोर जाना था। पर यह आपके भाग्य में नहीं बदा (नियत) था। किन्ही कारणों से आप इस नौकरी पर जा न सके।

सन् 1973 ई० में आपकी नियुक्ति राज्य के शिक्षा विभाग में अध्यापक के रुप में हुई। और अपने जीवन के अनमोल वर्ष आपने अध्ययन– अध्यापन के साथ–साथ अध्यात्म चिन्तन में व्यतीत किये। भाई जी की तीन बहने है। तीनों सुखी सम्पन्न

पारिवारिक जीवन व्यतीत कर रही हैं।

माता श्रीमती सोऽन बटनी जिन्हें परिवार जन स्नेहवश नऽनऽ भी कहते है आज भी अपने पुत्र रत्न को आशीर्वादों का कवच पहनाकर भविष्य के मंगल और शुभ की कामना करते हुऐ जीवन व्यतीत कर रही हैं।

भाई जी का शुभ विवाह अक्टूबर सन् 1975 ई० में नागाम (जिला बडगाम, कश्मीर) निवासी पण्डित निरंजन नाथ भट्‍ट की सुपुत्री तेजा कुमारी भट्‍ट, जिन्हे प्यार से ***शाहजी*** भी कहते हैं, के साथ सम्पन्न हुआ विद्याता ने आपके पारिवारिक जीवन को निसंन्देह आन्नदमय बना दिया। दिसम्बर 1978 ई० में अपने पुत्र (सुनील) तथा जुलाई 1980 ई० में पुत्री (बबीता) के जन्म के साथ ही दाम्पत्य जीवन पुष्पित होने के साथ–साथ महकने लगा। हाँ, जिम्मेदारियाँ बढ़ गयी लेकिन पितृ–ऋण से अवश्य से उऋण हुए। श्रीमती तेजाभट्ट एक शिक्षित महिला है। आप बी० ए० पास है और सरकारी शिक्षा विभाग में अध्यापिका के पद पर कार्यरत हैं। मैंने श्रीमती भट्‍ट को एक पूर्ण समर्पित सद्यवा के रुप में देखा है, निकट से देखा है। और उनकी कर्तव्य परायणता, निष्ठा, पातिव्रत सरलता और सहजता ने मुझे बहुत प्रभावित किया है। यही तो हमारी सांस्कृतिक पहचान है, यही तो हमारे हिन्दुत्व का गौरव है, और यही कश्मीरियत है। आपका सेवा भाव निःसन्देह अनुकरणीय है। यह सर्वविदित बात है। कि प्रत्यक्ष सफल पुरुष के पीछे उसकी महिला का (अंर्द्धांगिनी) प्रत्येक एवं परोक्ष रुप से योगदान रहता है मेरी नजर में विरक्त संत का उतना महत्व नही है जितना कि एक ग्रहस्थ संत का होता है वह एक साथ सूझबुझ से दो दो भूमिकायें निभाता है। यहाँ हमें भोग और त्याग का, आकर्षण और विकर्षण का समर्पण

और विश्वास का तथा स्वहित एवं जनहित का संतुलित संयम देखने को मिलता हैं। साधना पथ पर वर्षो निरन्तर अभ्यासरत रहने के पश्चात भाई जी आज दिव्य वक्षु सम्पन्न सिद्ध संत के रुप मे हमारा मार्ग दर्शन कर रहे हैं। आपने स्वयं स्वीकारा है कि आपके गुरु कोलकाता निवासी स्वामी आन्नद स्वराज सरस्वती है जिनसे मिलने का सौभाग्य आपको प्राप्त हुआ गुलमर्ग के आगे द्रंगबल के घने जंगलों मे, जहाँ वे तपस्यारत थे। यह सन् 1971 ई० की बात है। इससे पूर्व ज़िला अनन्तनाग में स्थित गौतम नाग तीर्थ स्थल पर उस समय विराजमान स्वामी सर्वानन्द जी के आश्रम में भी आपको कई दिव्यानुभव प्राप्त हुए। कुछ ऐसी घटनाये घटी, स्वामी सर्वानन्द ने अपनी दिव्य शक्ति का उन्हें कुछ ऐसा आभास कराया कि आप मंत्र मुग्ध हो उठे और भीतर आत्म ज्ञान उपलब्धि प्रेरक चिनगारी भड़क उठी। आप ही के शब्दों में –'परमार्थ की रहस्य की खोज ने जन्म लिया'

भूमिका –'संजीवनी' VIII

स्वामी सर्वानन्द जी ने भविष्यवाणी करते हुए आपको सूचित किया जाता था कि "आपको अपने सदगुरु पथ प्रदर्शक तीन वर्षो के पश्चात स्वयं ही ढूँढ लेगें"।

भूमिका –'संजीवनी' IX

ठीक तीन वर्ष के बाद ही आप अपने गुरुदेव स्वामी आन्नद स्वराज सरस्वती – से मिले। स्वामी जी साधना के उत्तेजनात्मक पथ पर आप का तीब्रगामी देखने के हेतु प्यार से 'मस्ताना' कहकर पुकारते थे। देखा जाये तो आप ही 'मस्ताना' दिव्यानन्द के नशे मे चूर, मस्त, बेफिक्र और प्रसन्नचित्त स्वामी जी ने आपके व्यक्त्तित्व के अनुरुप ही आप को मस्ताना की पदवी से

सुशोभित किया है। भाई जी के व्यक्तित्व में हमें एक साथ कई गुणों का अद्‌भुत मिश्रण देखने को मिलता है। आप सरलभाषी है। मधुभाषी हैं। अल्पभाषी हैं। मुख मुद्रा पर प्रखर तेज व्यापत है। असाधारण ज्योतिपुंज का उत्स हैं आपके दो नेत्र। मुख पर मुस्कान सदा खिली रहती हैं। प्रत्येक आगन्तुक का यथोचित स्वागत करना आपका धर्म हैं। स्वयं प्रसन्न मुद्रा में प्रत्येक भक्त एवं श्रद्धालू का आदर सत्कार करते हैं और जब सतसंग में लीन हो जाते है तो वातावरण पूर्णतः आलौकिक हो जाता हैं। यह लयावस्था अथवा आत्मलीन हो जाने की स्थिति की पराकाष्ठा है।

संन्त होने के साथ–साथ भाई जी एक सर्जनात्मक कलाकार है। अल्पायु में ही आप काव्यलेखन की ओर प्रवृत्त हुऐ। रचनायें प्रकाशित होने लगी और बुद्धिजीवी समाज का ध्यान आपकी ओर आकर्षित हुआ। भविष्य की महान सम्भावनाओं का संकेत करते हुऐ आपकी रचनाओं की सराहना होने लगी और घाटी के नाम पर कलाकारों द्वारा संगीत की लय पर सुमधुर ध्वनि में रेडियो कश्मीर श्रीनगर से आपकी रचनायें प्रसारित होने लगी। यह उनकी काव्य साधना का प्रथम सोपान है।

द्वितीय सोपान पर आते आते 'गरीब' साधना के तपोवन में तपानल से तपकर तपस्फूत हो चुके हैं। सबकुछ समेटकर वह बाहर से अपने भीतर प्रवेश करके अद्‌भुत को निहार रहे हैं। श्री चमनलाल रैणा के शब्दों में–'जिस क्षण वह (कवि) बाहर से अन्दर चला जाता है। उस का आयाम परिवर्तित हो जाता हैं। तद्‌नुसार एक श्रेणी में कवि के अन्तर गर्भ की 'अनुभूति' साधना से झर–झर फूटती हुई ईश्वरी साक्षात्कार का अनुभव काव्य की ऐसी मीठी रसधार छोडती है, जो अमृत का रुप धारण कर

'कविता' से 'रिचा' (ऋचा) बन जाती हैं।

('संजीवनी'–प्रस्थावना एवं आमुख–पृ०VIII)

इस स्थिति में कवि, कवि नही रहता, ऋषि बन जाता है, भक्ति एवं श्रद्धा की पृष्ठभूमि पर यह ऋषिरुप देवतुल्य हैं। सृजन के नाना रंगो में साधना की प्रखरता का मिश्रण एक स्वर्णिम अनुभूति का आभास कराती है। सर्जनात्मक कलाकार को हर समय इस बात के लिये सचेत रहना पड़ता है कि श्रद्धा–भक्ति और काव्य के मध्य संतुलन बना रहे जो रचना में स्वतः सौन्दर्य–कण बिखेर देता है। भक्ति की आवश्यक्ता से अधिक हावी हो जाना काव्य साधना के हित में नहीं है। इस बात के लिये कलाकारों को सावधान रहना पड़ता है। बाल्मीकि, तुलसी, सूर, जायसी, परमानन्द, कृष्ण जू राज़दान, प्रकाशराम कुरगामी, विष्णु कौल व्योस, स्वामी गोविन्द कौल तथा अन्य अनेक भक्त कवियों ने इस संतुलन स्थापना की ओर विशेष ध्यान दिया है और भाई जी में भी यह गुण विशेष रुप से देखने को मिलता हैं।

आनन्द स्वरुप प्राणनाथ भट्ट एवं कवि प्राणनाथ भट्ट 'गरीब' वस्तुतः एक ही व्यक्तित्व के दो फोटू चित्र हैं आज की शब्दावली में टेलीविजन के स्क्रीन पर अथवा कम्प्यूटर के मॉनीटर पर दो फ्लैशा एक साथ दो–दो भूमिकाएँ निबाहना बड़ा मुश्किल होता है और पहुचें हुए साधक ही साधना के पथ का अनुसरण कर सर्जन की उर्वर भूमि में आनन्द/परमान्नद का बीज–वपन कर सकते है। भाई जी इस भूमिका को पूरी सफलता के साथ निबाह रहे है।

साधना के तृतीय और अन्तिम सोपान पर आकर स्वामी

जी पूर्ण लयावस्था में अपने इष्ट के साथ एकात्म होकर ज्ञान ज्योति से श्रद्धालू भक्त जनों के भीतर अन्धकार को मिटाने की चेष्ठा कर रहे है अब उनका लक्ष्य है:–

'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः'

सन् 2000 ई० में भाई जी का लेजर टाइप सेटिंग में 421 पृष्ठों का लीला और भजन संग्रह 'संजीवनी' शीर्षक से मीनाक्षी प्रिन्टर्स, नई दिल्ली से छपकर श्रद्धालु भक्तजनों के सम्मुख आया। इसका समाधान श्री चमन लाल रैणा जी ने किया हैं। संग्रह में 130 रचनाएँ (भजन, लीलाएँ, वाख) संग्रहीत हैं और इसके अतिरिक्त 'सुदामाचरित' 'गौरी स्तुति' एवं 'शिव महिम्ना स्तोत्र' को कश्मीरी भाषा में काव्यरूप प्रदान करते हुऐ भक्तजनों की हितकामना से प्रेरित होकर उपलब्ध किया गया है। पुस्तक कार साजसज्जा अत्यंत सुन्दर और आकर्षक है। आवरण पृष्ठ भगवान अमरनाथ के ज्योतिर्लिंग से सुशोभित है। पक्षियों का जोड़ा बतियाती मुद्रा में उन पक्षीजोड़ो की याद दिलाता है जो स्वामी अमरनाथ की गुफ़ा पर श्रावण पूर्णमासी को हजारो तीर्थ यात्रीयों का मन मोह लेते हैं।

प्रस्तुत भजन–लीला संग्रह पर दो दृष्ट्यों से विचार किया जा सकता हैं। एक भक्त कवि की सर्जनात्मक प्रतिभा का अनमोल रत्न समझकर इसे शुद्ध साहित्यिक दृष्टि् से परखा जाये और हंसबुद्धि के आधार पर इसकी उपलब्धियों पर विचार करते हुए भक्त काव्य के क्षेत्र मे इसके स्थान को नियत किया जाय। यहाँ प्रमुख उद्देश्य होगा– कवि प्राणनाथ भट्ट की सर्जनात्मक प्रतिभा पर सम्यक् प्रकाश डालना। हमें ज्ञात है कि सर्जन की सम्भावनाएँ महान होती हैं। 'रामचरित मानस' 'सूरसागर'

'कामायनी' 'साकेत' तथा कश्मीरी में 'शिवलग्न' 'सुदामाचरित' 'रामावतार व्यर्थ' धार्मिक पृष्ठि भूमि पर आधारित होते हुऐ भी राष्ट्रीय स्तर पर महान साहित्यिक रचनाएँ मानी जाती हैं। इस का कारण यही है कि आस्थावान होते हुऐ भी इन कवियों ने सर्वप्रथम अपने कवि धर्म को निबाहया है– पूरी तन्मयता के साथ। 'संजीवनी' भी इस दृष्टि से कश्मीरी भक्ति काव्य के इतिहास में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हैं। 'गरीब' के रचना संसार के नाना रंग अपनी समस्त शोखियों के साथ इस रचना की विविध लीलाओं में जल्वःगर हैं कथ्य, भाषा, भाव, अलंकार, स्थानीय रंग, प्रतीक योजना, बिम्ब विधान सभी दृष्टियों से यह एक स्तरीय लीला संग्रह हैं।

दूसरी दृष्टि एक श्रद्धालू भक्त की प्रेमाश्रुसिक्त दृष्टि है जहाँ तर्क का कोई महत्व नही। प्रत्येक रंग में निहित अघ्श्य रंग की छटा देखने को जी मचलता है। अपने साध्य के चरण कमलों पर नत मस्तक होकर उनकी अमृतवाणी की अनलहकनाद (अहं ब्रहनस्मि) भीतर के समस्त प्रकोष्ठों में गूँजता है। प्रत्येक पढ़कर आनन्द स्वामी भाई जी क़े प्रति आकर्षण के ढोर में बन्धकर काँच और कंचन के अन्दर का आभास होने लगता है। भक्त नतमस्तक निवेदन करते हैः–

'नेगऽ छुस लोगमुत मंज़ प्यवुनि शानि
जंगऽ छम नऽ क्यथ पाठय पकऽ मंजिलस,
अंग हीनस म्य ज्ञान करनाव गंगऽ वानि
हा गोसनि सानि सरतलि करतऽ सोन।'

कुलयाति कृष्ण जू राज़दान'
संम्पादक– सोमनाथवीर
पृ०–254

यहाँ कला की अपेक्षा लीला का कथ्य महत्वपूण है। यहाँ विश्वास की घुरी से बन्धे जीवन संघर्ष के द्रुतगामी पहिये गतिमान दिखाई देते हैं।

मेरा यह प्रयास होगा कि ऊपर वर्णित दोनों दृष्टियों में संतुलन स्थापित करते हुए मैं, भाई जी के रचना संसार पर अपने विचार व्यक्त करूँ।

***

'लीला' शब्द का मूल अर्थ है– खेल, क्रीड़ा, संसार रचना हेतु परमब्रहम के विविधरंग, वह गायन अथवा रचना जिसमें अवतार स्वरूप परमब्रहम की आलौकिक क्षमताओं का गुणगान किया गया हो लीला है !

कहने का अभिप्राय यह है कि लीला का सम्बन्ध स्रष्टा (Creator) के किसी प्रकट रूप की आलौकिक छवि के साथ होता है। भजन अथवा भक्तिरस प्रधान रचना में भी विषय अध्ययन से जुड़ा रहता है परन्तु जहाँ लीला में माधुर्य का प्राधान्य रहता है वहाँ भजन में निवेदन, आत्मसमर्पण, दैन्य, अनुग्रह भावना, ईश बन्दना, पुढवार्चन अथवा परमब्रहम की आलौकिक सिद्धियों एवं स्वरूपों का पूरी निष्ठा और विश्वास के साथ गुणगान।

इन दोनों काव्य विधायों मे परस्पर बहुत बारीक अतंर हैं।कृष्ण प्रेम में उन्मत्त भक्त लीला के द्वारा अपने ह्दय का माधुर्य कलश इश्ट देवों के चरणों पर उँडेल देता है और शक्ति माँ के सम्मुख नतमस्तक होकर वही भक्त देवी माँ के अनुग्रह के हेतु यों आर्तनाद करता सुनाई देता है:–

चॅु छख राऽग्न्या चॅु छख शारिका
चॅु छख शक्ती चॅुॅ छख माता

छुस नादार स्यठा लाचार
चॅु बरव्शन हार जगत अंबा।
चॅु छख ज्ञानन अन्दर थॉद ज्ञान
चॅु छख ध्यानन अन्दर बोड. ध्यान
चॅु छख माज्यन अन्दर बज्ड् माऽज्य
छुसय सन्तान वंदय ना प्राण।
चॅु भख्त्यन पॉनु मोय चावान
म्य चावुम जाऽन्य हुन्द दामा
बॅु छुस नादार स्यठा लाचार
चॅु बख्श्नहार जगत अंबा।'

'संजीवनी'– आनन्द स्वामी प्राणनाथ भट्ट 'गरीब'
लीला नं०–2

कश्मीरी भक्ति काव्य की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता की ओर आप का ध्यान आकर्षित करना चाहता हुँ। यह विशेषता भाई जी के रचना संसार का भी आकर्षण बिन्दु है।

कश्मीरी भक्त कवि मूलतः समन्यवादी (Harmonizing) हैं। वह निर्गुण, सगुण शिव–शक्ति, राम –कृष्ण, देवी माँ के विविध रूपों का सम्मान निष्ठा के साथ स्तुतिवन्दन में लीन रहता हैं। इतना ही नहीं वह सूफ़ियों के तसव्वुफ से भी मौक्तिक कण चुन लेता है। उसके विचारानुसार अध्यात्म को किसी एक खूँटे से बान्धने की जरूरत नहीं हैं। ध्येय वस्तुतः एक है! लक्ष्य सर्वविदित और साध्य अनन्य हैं पर उस लक्ष्य तक पहुँचने हेतु भिन्न–भिन्न मार्ग विविध दिशायों में साधकों के निरतंर चलने से पगडंडियों के रूप में दिखायी देते हैं पर सबका अन्तिम लक्ष्य एक ही है, भारत के भक्ति साहित्य में यह बात बहुत कम देखने

को मिलती हैं। वहाँ रामभक्त सम्प्रदाय अलग है और कृष्ण भक्त सम्प्रदाय अलग, शक्ति माँ के उपासक अलग है। और राधास्वामी अलग, निर्गुणपंथी अलग है, और सूफी साधक अलग। अर्थात यहाँ भक्ति ने दृढता के साथ सम्प्रदाय का रूप धारण किया है। लेकिन कश्मीरी भक्ति साहित्य का मूलाधार समन्वय है। स्वामी परमानन्द एवं पण्डित कृष्ण जू राज़दान को पढ़कर अथवा शम्स फकीर , अहुदज़रगर और समदमीर की रचनाओं का गहन अध्ययन करने के पश्चात यह समन्वयवादी दृष्टि हमें विशेषरूप से आकर्षित करती हैं। समदमीर के शव्दों में:–

चलि यस शक, दीऽय, व़रव तऽ शुभहु
राम रहीम तस यकसान छू
गलि यस मनऽ दीऽय बनि साधू
पर ओऽम् सू पर ओऽम् सू
कथ बोज़ वथ छय सथ त्रोपरू
गथ कर यारस नारस अू
काम गाल खाम यऽनि रोजी मूह
पर ओऽम सू पर ओइम् सू।'
('कुलयाति समदमीर'–मोतीलाल साक़ी)

पृ०-180-182

अथवा

'आवारऽ कडरनस मारऽमडतिये, पार्वती ये लो ।
दिलदारऽ छिम दिलस नारऽ तऽतिये, पार्वती ये लो।
सतऽ ॠषयव रटय कोह बयाबान
ॠरऽहोन भगवान
तिम गारऽनुई मंज़ आरऽकतिये,. पार्वती ये लो !

सथ कुठि यथ म्यानि जाय शूभान
सत छिसो सुलतान
सीतायि रामावतार ततिये, पार्वती ये लो।'

(कुलयाति समदमीर – मोती लालसाकी
पृ०144-145)

यही समन्वयवादी काव्य दृष्टि 'संजीवनी' में संग्रहीत रचनाओं में भी देखने को मिलती है। भाई जी को किसी एकमत सम्रदाय अथवा बाद के साथ जोड़ा नहीं जा सकता। वह वादी नहीं है और न बनना चाहते है अरे वह तो संत है, उनका ह्रदय पाररर्दर्शी है, उनकी दृष्टि दिव्य है, उनका चिन्तन योगी का चिन्तन है और उनकी अभिव्यक्ति एक कवि की अभिव्यक्ति है वाह! क्या अद्भुत मेल है एक योगी और एक कवि का निसन्देह दिव्य एवं अद्भुत ।

भाई जी ने अपनी कई रचनाओं में शिव स्तुति की है। शैव धर्मानुयायी होने के कारण कश्मीर के शैवमत एवं शिव सम्प्रदाय से प्रभावित होना उनके लिये स्वाभाविक है। देखा जाय तो शिव तब तक शव है जब तक शक्ति का सहयोग उसे प्राप्त न हो। शक्ति के बिना शिव अपूर्ण है और शक्ति की सिद्धि शिव में निहित है। समय-समय पर विभिन्न भक्त-कवियों ने कश्मीरी भाषा में शिव स्तुतियाँ लिखकर परमशिव सच्चिदानन्द गण को समर्पित की हैं। इस दृष्टि से लल्लेखरी के बाद स्वामी परमानन्द, कृष्णजूराज़दान,स्वामी गोविन्द कौल तथा भवानी भाग्यवाद दयद उल्लेखनीय हैं। कृष्णजूराज़दान ने 'शिव परिणय' (शिवलग्न) कथात्मक काव्य लिखकर शिव शक्ति को नूतन आयाम प्रदान किये है। भाई जी ने एक दृढ़ निश्चयी शिव भक्त

के रूप में आत्म निवेदन के साथ अपना सब कुछ शिव चरणों में समर्पित किया है। इन भक्तिपरक लीलाओं में भक्त अत्यन्त दैन्य भाव से शिव की क्षमताओं का उल्लेख करते हुए हाथों की अंजुलि में भावनाओं के सुमन भर कर शिवमस्तक पर श्रद्धा और निष्ठा के साथ अर्पित कर रहे है। परमप्रिय का आश्रय प्राप्त करने के हेतु भक्त आत्म विस्मृत होकर विनीत शव्दों मे यौँ याचनारत दिखाई देता हैः–

तीज़ु चान्यि गालि म्यऽन्य पापु शीनु माऽन्यी
शिवनाथ्युँ चाऽन्यी करान पूज़ा
वासुक तुँ च़न्द्रम छुय च़्य्य लूभाऽनी
शिवनाथ्युँ चऽन्यि करान पूजा।

'संजीवनी' पृ०–05

भावुँनागरादस छि पम्पोश चाऽन्यी
नतुँ कति वुजिहे नागन पोन्य
च़ोर वेद च़ेय छिय लोंलि ललुँवाऽन्यायी
शिवनाथ्युँ चाऽन्यी करान पूजा।

(संजीवनी–पृ०–05)

भक्त परमशिव के अनुग्रह का अभिलाषी सदा प्रतीक्षा में उसकी दया और अनुकम्पा के हेतु प्रार्थनारत रहता हैं। आशुतोष की यही विशेषता है कि स्वयं अपनी लीला के सर्ज़नाहार होने के साथ–साथ दिव्य–वक्षुओं से सृष्टि विस्तार का भोक्ता भी होता है। भक्त की स्थिति तो नेत्रहीन जीव की स्थिति है उसे क्या चाहिये– दो आँखे, अतः अद्‌भुत सौन्दर्य पान के हेतु शिवार्चना में यौँ लय हो जाता हैः–

'संजीवनी' पृ०–8

(नासूत, मलकुत, जबरूत, लाहुत) पार करता हुआ तथा विभिन्न मंजिल/मुकाम, शरीयत, तरीकत, मारिफ़त, हकीकत,) तय करता हुआ **अनुहुलाहक** (अहं ब्रहमस्मि) की स्थिति में पहुच जाता है। यही 'एकमेक' होने की अवस्था है जिसे सूफी 'हाल' की स्थिति में पहुचना कहते है। साधना का यह पथ अत्यन्तं दुशवार एवं गहन है लेकिन सूफ़ी आशिक इस पथ पर निकलकर अपने माशूक में लय होने के लिये लालायित रहता है। वास्तव में मारिफ़त (वास्तविक ज्ञान,अध्यात्म, पहचान) के रहस्य से अवगत होकर इरफ़ान (ब्रहमानन्द, ब्रहमज्ञान, दिव्यानन्द) के आनन्द रस में मग्न हो जाना सूफी साधक का लक्ष्य हैं। वह रिंद (रसिया, मस्त, मघप) बनकर **वज्दानी कैफियत** (आनन्दधिक्य से आत्म विस्मृति की दशा) की अवस्था में मधुर प्रिय–स्मृति में खो जाता है। 'हाल' की अवस्था में पहुचकर उसकी दृष्टि मुक्त हो जाती है और भीतर **शशकल** (तसव्वुफ़ में एक मुकाम की निशान देही) का उत्स फूट पड़ता है। भाई जी अपनी एक लीला में लिखते है :–

विश्वास सऽदुॅरस तऽल्य अचा़न
ला़ले बदखशां जान्यि जान
तिम रिन्दुॅ ज़िन्दुॅ छिनुॅ ज़ाहुँ मरान
नोशा करान मय रवानुॅसुॅय
सतसंग छु प्रेंयमुक रंग कड़ान
ज़न सिर्यि ताबान पानुॅसुॅय।
ग्वरुॅ द्वार ग्वरुॅ गंगा वसांन
शंकर प्रसन्नचित अत्यि असान
शेशकल छि नारस मँज़ वुहान

'पऱुँथ पानय इबारथ म्यांन्यि
कर्मयलान्यि द्रिमुहय मीठ्य
म्यें लोब ठहराव च़ऽज्य च़लुँलार
गमन गमरवार नजर चाऽन्यी।
दमन मंज़ दम बुॅ गंऽजुरान छुस
ब्रुॅज्यन दुॅन्दि चिहु ति सुमरान छुस
गहे बेदम गहे दमदार
गम़न गमरवार नज़र चाऽनी।
गहे सथ तय असथ त्राऽविथ
बऽविथ शिवुॅ रूॅप जटा धाऽरिथ
शिन्यस हिर्योर चोन ज्योति द्वार
गमन गमरवार नज़र चाऽन्यी।'

('संजीवनी'–पृ०120,121,122)

***

संत कवि के अध्यात्मिक चिन्तन पर तसव्वुफ की साधना–पद्धति का पर्याप्त प्रभाव पड़ा है स्वयं भाई जी सूफी सन्त और कवि अहुदज़रगर के बहुत करीब रहे और ज़रगर साहब ने उनकी कुशाग्र बुद्धि और सर्जनात्मक प्रतिभा को सराहा हैं। इस्लाम के रहस्यवादी 'सूफी' कहलाते है और उनके दर्शन को तसव्वुफ कहा जाता है। सूफी परमात्मा को परमसत्य मानने के साथ साथ अपना माशूक भी मानता है और आशिक बनकर वह उस पर निछावर होने के लिये वैसे ही व्याकुल दिखायी देता है जैसे फतिंगा दीपक पर! सूफी इस सृष्टि को उस परमसत्य का प्रतिबिम्ब मानता है, वह इश्क मजाज़ी के पथ पर इश्क हक़ीक़ी की खोज में निकल पड़ता है और साधना की विभिन्न अवस्थाएँ

अद्वैतवादी चिन्तन को यॉं वाणी प्रदान करते हैः–

'हम सू दारि बेहु न्येह घटि फेरे
ज्येरे ज्येरे सूहम भाव
पुशरिथ मन प्राण तस लाग शेरे
ज़्येरे ज़्येरे सूहम भाव।
चॅु तॅु बॅु तॅु हुतॅु सु अति क्या न्येरे
लछि नोंव आऽसिथ छुय बेनाव
बेशुमार जोंयि अकि आगरॅु न्येरे
ज़्येरे ज़्येरे सूहम भाव।
अऽछ दरॅु लज्यि मचॅु च्यान्येवेरे
पछ़ि हॅुन्ज़ थप छम वछिसॅुय मंज़
लुकॅुमोत अन्यिगॊट वति वति गेले
ज्येरे ज्येरे सूहम भाव।'

एक अन्य लीला में भाई जी अद्वैत के चिन्तन से प्रभावित 'जीव' और 'ब्रहम' शब्दों को पर्यायवाची समझकर सृष्टि–नियंता की इच्छा का प्रतिफलन मानते है। इस लीला का भावात्मक सौन्दर्य देखते ही बनता हैं। विरले ही इसको समझ सकते हैं। अथवा महसूस कर सकते है। अमृत पान की इच्छा किसको नही होती लेकिन अमृतपान का अधिकारी बनना हर एक की बस की बात नहीं हैं। जिसे यह सौभाग्य प्राप्त हुआ वह अपने दिव्य वक्षुओं से सृष्टि के रहस्य से अवगत होकर अध्यात्म की ऊँचाइयाँ छूने लगता है। भाई जी के शब्दों में :–

बॅुय छुस चन्द्रमॅु शीतल बनान
अऽग्नुय बऽनिथ छटान नार
यन्द्रे अचा़न अऽथ्य मंज दज़ान
पानय पानस नमान छुस।

बुॅय छुस विष्णो ज़गतस रछान
ब्रहमा सृष्टी दिवान कनुॅ
शंकर ताडंव नचुना करान
पानय पानस नमान छुस।
गीता पनुॅन्य पानय परान
ज़्यव छम करान बऽल्य गांगल
ज़्यव छम पोंज तय अपुज़ वनान्
पानय पानस नमान छुस।'

'संजीवनी' –पृ०–167-168

जीव और बहम्र के मध्य माया की भूमिका भौतिक जगत की सृष्टि के हेतु अत्यन्त महत्वपूर्ण है । आखिर लीला का विस्तार कैसे सम्भव हो सकता है! शिव अनेक बनने की इच्छा के प्रतिफलन हेतु माया को सक्रिय बना देता है और जीव उसके मोहपाश में बन्ध कर स्वर्ण श्रृंखलाओं में जकड़ जाता है इस माया मोह रूपी मकड़ी के जाले में जब वह पूर्णरूपेण उलझ जाता है तो कभी – कभी उस उलझन में अपनी सत्ता तक खो देता है तो कभी यर्थाथ की उष्णता से उसकी बुद्धि का यख पिघल जाता हैं। उसे एहसास होने लगता है कि मैं तो घाटे में रहा, मैने सबकुछ खो दिया, जन्म यौं ही व्यर्थ गँवा बैठा और जब यह अनुभूति शिद्त पकड़ लेती है तो जीव विचलित होकर यौं विलाप करके रह जाता है:–

–संसार ज़ालुॅ छुस वलुॅनुॅ आमुत
मायायि हुॅजि रजि गंडुॅनुॅ आमुत
मारुॅ गोस नतुॅ जल गंड़ म्यें मुचॅ़राव
बोंठ वाति पानय म्ये फुट मुॅच नाव।
लूभस छि बाऽज्यवठ क्रूधस सूॅत्य

नावि वाऽल्य भ्रम दिथ मायायि कूॅत्य
चीरॅुवुॅन्य दुऽल्यछिम यीर वन्यिनाव
बोठ वाति पानय म्यें फुटॅमुच़ नाव।

('संजीवनी'—पृ०16-17)

जीव जब अपने पथ से विचलित हो जाता है अथवा माया के अधीन होकर परवश हो जाता है तो चन्दलमहों के लिये बिना पंख के ही आकाश में उड़ान भरने प्रयास करता है लेकिन शीघ्र ही जब उसे अपनी क्षुद्रता का एहसास हो जाता हैं वह तड़प तड़पकर आठ आठ आँसू रो उठता है। सिद्धि पथ पर एक नहीं अनेक वैरी उसको ललचाई निगाहों से ताकते है, घूरते हैं और निगलने के लिये उद्दत हो जाते हैं। काम, क्रोध, वैर, लोभ, मोह एवं अहं भाव ने तो उसे परवश बना के, छोड़ दिया है धीरे—धीर गल जाने के लिये। हाँ, उसे अपने किये हुऐ पापों का फल भुगता होगा। आखिर उसके बदले कौन भुगतेगा। चारो ओर से निराश होकर वह परम सत्य की शरण में आकर पूर्णतः आत्म समर्पण कर देता है और आत्म निवेदन करके खुन के आँसू बहा देता हैं। कहते है भक्ति में **प्रायश्चित** **(atonement)** आत्मशुद्धि के हेतु नितांन्तावश्यक हैं। यह तो साधना के पथ का पहला पड़ाव है और इस पड़ाव पर आत्म नियंत्रण का अपना विशेष महत्व हैं। कवि असहायावस्था में प्रार्थनारत ईष्टचरणों में निवेदन करता है किः—

'फुतुॅ फुतुॅ गोंमुत वुछतम पानस
नज़रा करतम हे
तापु वुडुॅर मंज़ सेंकि माऽदानस
साया थवतम हे।

i) कामुॅ ज़िसस मंज त्येलि कवुॅ फॅटुहा

नजरा करतम हे।

ii) क्रूॅधन नार गोंड सतुॅक्यन जामंन

iii) मदुॅ हुऽस्य अहमन अऽछ पऽट गंडडुॅनम

iv) वाऽरन कंऽरुॅनम वुछ मोंछि मूरन

v) ओंगनुय आऽसिथ दोंगुॅन्यार पुॅठु गौम
मंज़ व्यवुॅहारस दुॅयतुक त्योंल प्योंम
त्रुॅशनायि क्रुॅम प्योंम ज्हारुॅय त्येल्योम्
नज़रा करतम हें।

('संजीवनी'–पृ०54-55)

इस प्रकार जीव भगवत् कृपा के हेतु आर्त और दीनहीन मुद्रा प्रतीक्षा रत दिखायी देता है। उसे पूर्ण विश्वास है कि उल्झन को तो केवल परम तंन्त्र ही सुलझा सकते है। दास्य भाव की भक्ति का पथानुसरण करते हुऐ अर्द्ध जाग्रत अवस्था में जीव भगवत् कृपा को पाने के हेतु लालायित रहता है। वास्तव में भक्त और इष्ट का अपने आप में स्वर्गिक माना जाता है। इस सम्बन्ध में गुरू के अतिरिक्त किसी और मध्यस्थ की कोई भूमिका नहीं हैं। ईश कृपा का प्रसाद पाने के हेतु भक्त पूरी निष्ठा और दृढ़संकल्प के साथ साधना में जुट जाता हैं। देखिये हनुमान, प्रहलाद, शबरी, केवट, अहिल्या, यशोदा–नन्दबाबा, मीरा, परमानन्द, कृष्ण जुराजदान, स्वामी गोविन्द कौल आदि सब भक्त ही तीर्थ थे जिन्हे अपनी निष्काम भक्ति का प्रसाद जीते जी प्राप्त हुआ है। भाई जी उसी निष्काम भक्ति पथ पर आगे पग बढ़ाते नज़र आते है। जीव और ब्रहम के बीच गहरी खाई को पाटना होगा और यह ईश कृपा के बिना सम्भव नही। अतः संत कवि परमप्रिय की कृपा दृष्टि पाने के हेतु यों अश्रसिक्त निवेदन करते हुऐ दिखाई देते हैं:–

ज्ञान मार्ग, उसमें ज्ञान के साथ भक्ति का समन्वय नहीं होता। कश्मीर शैवमत में ज्ञान और भक्ति का समन्वय है, शिव को ही परमेश्वर मानने वालों को शैव कहा जाता है और उनके धर्म को शैवमत। शिवका अर्थ है शुभ या कल्याण। (2)

भाई जी की लीलाओं पर कश्मीर के शिवदर्शन एवं शंकर के अद्वैतवादी चिन्तन का समान रूप से प्रभाव पड़ा हैं। साधना के पथ पर प्राप्त अनुभवों के आधार पर भाई जी अपनी लीलाओं में गहन दार्शनिक तथ्यों को भी अनावृत करते हुऐ आगे बढ़ते हैं। 'सोऽहम'– मैं वही हुँ अर्थात ब्रहम हूँ। बृहत् हिन्दी कोश' में इसकी व्याख्या इस प्रकार की प्रस्तुत की गयी–'यह वेदान्त दर्शन का वाक्य है जिसमें यह माना जाता है कि इस ब्रहमांड में ब्रहम व्याप्त है और जो कुछ है सब ब्रहम ही है, जीव भी ब्रहम ही है, पर जागतिक माया के आवरण के कारण अपने (ब्रहम) रूप को पहचान नहीं पाता जब उक्त आवरण हट जाता है तब वह ब्रहम ही हो जाता है।

(1) 'बृहत हिन्दी कोश' – ज्ञान मण्डल लिमिटेड, वाराणसी
संम्पादकः कालिका प्रसाद तथा अन्य –पृ०1561

'सोऽहम' ही कश्मीरी भाषा में 'सूहम' बन जाता है हिन्दी में हम 'मैं'सर्वनाम का बहुवचन है।
फारसी भाषा मे 'हम' का अर्थ है–समान, एक सा, 'सो' का अर्थ है – वह।

वह जो एक समान हम सब में व्याप्त है–'हम सो' कहलाता है। वही कश्मीरी में **'हमसू'** बन गया। इसी 'हम सू' एवं सूहम (सोऽहम)के आधार पर भाई जी अपनी एक लीला में

---

(2) 'हिन्दी साहित्य कोश' भाग -1-पृ०837-838

'सन्यास धोरूथ काऽलास वाऽसी
दीविय तुँ दिवता दाऽसी चाऽन्य
सूरुँ मति चुँय छुख भस्माधाऽरी
कासतम खडरी थावतम गोश।
यिछु भ्रम सोरूय काया छि छाया
यि छि बस चाऽन्यी माया अरव
जऽटि छय गंगा अमृत धाऽरी
कासतम खाऽरी धावतम गोश।

फलि फलि प्रोंण ज़ग कडुकति ओंनू छुस
खुरि लद कर्मस वोन दिमुँ क्या
गरीबों ध्यान धार परव साऽरय साऽरी
कासतम खाऽरी थावतम गोश'

'संजीवनी'–पृ०–8

'अहुं ब्रहनस्मि न द्वितीय अस्ति' अर्थात् मैं ही ब्रहम हुँ, कोई दूसरा नही। यही 'सोऽहम' अथवा 'सोऽहम स्मि' हैं। जीव और ब्रहम के एकत्व का यह सिद्धान्त मूलतः अद्वैतवाद चिन्तन का आधार बिन्दु हैं। जगत का मूल तन्त्र तो एक ही है जो अगम, अगोचर अचिन्त्य, अलक्षण तथा अनिवार्यनीय हैं।

अद्वैतवाद का मूल ऋग्वेद मे हैं। उपनिष्दों में इसका विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है। माण्डूक्य उपनिषद् में 'आत्म ब्रहम है' यह स्पस्ट घोषित किया गया हैं। (1)

अद्वैतवादी को ही वेदान्ती भी कहा जा सकता हैं। कश्मीर शैवमन अनुयायी भी मूलतः अद्वैतवादी है। अद्वैतवादी

---

(१) 'हिन्दी साहित्य कोश' भाग(1)ज्ञान मंडल लिमेटेड, वाराणसी तृतीय संस्करण-1985 ई०–पृ०–16-17

लाऽरिथ़ गछ़ान इरफानुॅसुॅय।'

('संजीवनी'–पृ० 244-245)

भाई जी के सम्पूर्ण भक्ति काव्य का प्रमुख आकर्षण गुरू वन्दना में है। गुरू के प्रति उनका समर्पण निस्सन्देह अनुपम है और प्रत्येक भक्त को अपनी गुरू वन्दना से मोह लेते है

'गुरू' शब्द केवल पथ प्रदर्शक उद्धारक के रूप में ही प्रयुक्त नही हुआ अपितु अपने व्यापक अर्थ में इष्ट का वाचक बन जाता है। भाई जी ने कई लीलाओं में मुक्त कंठ से गुरूद्वार की महिमा का गुणगान किया है वस्तुतः सम्पूर्ण भक्ति काव्य का यह प्रमुख आकर्षण है यह सत्य है कि 'गुरू के बिना गत नहीं' 'गुरू के बिना सिद्धि नहीं'
'गुरू के बिना ज्ञान नहीं। गुरू ही वस्तुतः शिष्य के भीतर शाश्वत ज्ञान– प्रकाश की लौ उदीप्त करता है। 'शशकल' के उत्स को प्रवाहित करने में भी गुरू की भूमिका अहुम्म है। यह बात सर्वविदित है कि संत कबीर ने ईश्वर और गुरू के बीच गुरू को चुना और उनके चरण पकड़कर स्तुति वन्दना में लीन हो गये। कश्मीर के बहुचर्चित संत कवि पण्डित कृष्ण जू राजदान लिखते हैः–

'ओन छुस ज़ाऽन्य हिजं वथ वुछनावतम
सत गोरू हावतम गटिमंज़ गाश।
ग्यानिक न्यथरूय वारऽमुचरावतम
पम्पोश जन फोल रावतम मन
अद्वैत भावकिन पानस छावतम
सतगोरू हावतम गटि मेज़ गाश।
मूलतलऽः ऽ ओसुस न्यरमल पोनी

व्यवहार प्रकृच़ कोरनम यरव
निर्णाय गर्मी सूत्य व्यगलोवतम
सतगोरु हावतम गटि मंज़ गाश।'

('कुलयाति कृष्णराम जूरादान'– सम्पादकः सोमनाथवीर
जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी श्रीनगर प्रकाशन)
पृ०–94-95

भाई जी अपनी रचनाओं में बारम्बार गुरू के चरणों में श्रद्धा के सुमन अर्पित करते हुऐ गुरू कृपा के प्रति अपनी दृढ निष्ठा व्यक्त करते है। केवल उनकी गुरू स्तुतियों पर ही एक विस्तृत शोध पत्र लिखा जा सकता है उन्होनें गुरू गुरूद्वार, गुरूमत्रणा और गुरूपदेश को साधनात्मक जीवत में संजीवनी सध्य स्वीकारा हैं। उन्हे इस बात की चिन्ता नहीं कौन क्या कह रहा है :–

'कुस क्या वन्यम छुनु अथ सनुनु
ग्वरॅु दीव नखि डखि घुम पनुन
तऽस्य छुम वनुन गुदुरून बनुन।
ग्वरॅु दीव नखि डखि छुम पनुन
स्रॅरवम तॅु अर्पण छुस बॅु चे़ंय
ग्वरु दीप च़्ये रोस कुस छुम
अमृत कोंडुक वुज़नाव श्रेहु
ग्वरॅु दीव नखि डखि छुम पनुन।'

('संजीवनी'–203-209)

वे भक्त अथवा सिद्ध संत जो गुरू–द्वार पर निछावर होते है जीवन में कुछ खोकर भी बहुत कुछ प्राप्त करते हैं। भौतिक सम्पदा, वैभव एवं सामर्थ्य का यहाँ कोई मोल नही। यहाँ 'लोल' का महत्व है और इस 'लोल' में जितनी सघनता होगी, जितनी

पुरण्तगी (परिपक्वता) होगी तथा जितना विस्तार होगा, जीवन सिद्धि को उतना ही समीप समझना चाहिएः–

'ग्वरुँ दामानस लाल ताबानय
कम जानानय बोज़
लोलुँ व्येमानस रवऽत्य परवानय्।
कम जानानय बोज।
ग्वरुँ द्वारस आऽस्य पान पथुँरानय
मांझान अन्तः करण
बेरंगुँमंज़ आऽस्य रंग न्येरानय
कम जानानय खोज।'

('संजीवनी'–पृ०–88)

उन्हें दृढ विश्वास है कि गुरू–उपासना भक्त के जीवन को एक नई दिशा प्रदान करती हैं। गुरूपासना मे अपार क्षमता है, विपथगामी भूला भटका राहगीर भी गुरू उपासना से जिन्दगी के 'कु' को 'सु' में बदल सकता हैं। भक्त में श्रद्धा और विश्वास और विश्वास का अपना विशेष महत्व है भक्त अपने ईष्ट के प्रति निष्ठावान रहते हुऐ आत्म समर्पण करके निश्चिन्त हो जाता है उन्हें विश्वास है कि अपने शिष्य के हेतु गुरू स्वयं पथ की सारी बाधायें मिटाकर मार्ग का कंटकहीन कर देगें सब कुछ इस बात पर निभर्र करता है कि भक्त आत्म निवेदन मे कितनी उष्णता हैः–

ग्वरुँ पाद युस छु पूजान
वोपुँदान तस छु ब्रहमज्ञान
अंदुँरिम न्यबर छु न्येरान
गछ़ वोंन दिवान जिगरो।
गोंरं कंड़िय कड़ी च्ये़ पादन

वाती सु पूरुँ दादन
समुँखी सु न्यथुँ प्रभातन
गछ़ वोन दिवान जिगरो।
शेरी सु कर्मलीखा
करि स्यड़ज़ सु भाग्यरेखा
सोय ग्वरुँ दया करीना
गछ़ वोन दिवान जिगरो।'

('संजीवनी'–पृ–45)

*

कवि 'गरीब' ने अपने भक्ति काव्य में मानव–मन के विषय में गम्भीरता से विचार किया हैं। मनवस्तुतः ज्ञान, संवेदन, संकल्प आदि की साधनारूप अन्दर–इन्द्रिय है, जिसे चित भी कहते हैं। अतःकरण की संकल्प विकल्प कराने वाली वृत्ति(1) मन को नियंत्रित करना अथवा काबू में रखना भक्त के लिये पहली शर्त है। अनियंत्रित अवस्था में यही मन हमें धलधल मे धकेल देता और क्रीत दास की स्थिति में हमें जीने के लिये विवश करता है। उस स्थिति में हम जिन्दा लाश की तरह जीवन जीते है – पशुवत, विवेकहीन और लक्ष्यहीन!

लेकिन यही मन जब साधनात्मक जीवन में नियंत्रित हो जाता है अथवा अनुशासन अधीन रहकर जीवन व्यवहार में भागीदारी बन जाता है। तो भक्त के जीवन मे बसंत का माधुर्यमय उल्लास छा जाता है अथवा निखर उठता है। बड़ी स्वार्गिक कल्पना है जिसे यर्थाथ में बदलने हेतु योगाभ्यास के क्रियापथ पर चलना अनिवार्य हो जाता हैं। भाई जी मन को ही तीर्थ समझकर भक्त को सावधान करते हुए लिखते हैः –

'मन छुय तीर्थ सन तो पानो
मव फेर और म्यान्यिजानानो
रिन्दुँ पान ज़ाल ज़िन्दय परवानो
मव फेर ओंर म्यान्यि जानानों।
मनचे गंगायि पाज़ा करतम
इन्द्रे शोमुरिथ मन माल ज़पतम
गंगा माता यीयि पाऽन्यपानो।'
मव फेर और म्यान्यि जानानो।'

('संजीवनी'–पृ०–61)

योगाभ्यास के क्रिया पथ पर साधक जब तमस अन्धकार में ज्ञान की ज्योति प्रज्वलित करता है अथवा भीषण अग्निदाह से मन के मैल को जला डालता है तो विशुद्धावस्था में मन खालिस सन्त का पर्याय हो जाता है। भाई जी के शब्दों में: –

'मनुँचे मनकल्यि नार वुहनोवुम
दम दिथ प्राणन होवुम पान
अन्धुँकारस मंज़ चोंगा ज़ोलुम
दम दिथ प्राणन होवुम पान
सतुँकिस यन्द्रस पन येल्यि खोंरुम
अपुँज्युक गंड मुचुँरोवुम तान्य
चक्रस मंज़ पाना न चुँनोवुम
दम दिथ प्राणन होंवुम पान
वोलॅ बुरंस तोंल बार करुँनोवुम
काम क्रूध ज़ाऽलिथ हुमुमस पान
प्रेमुक मनथुँर मन परुँनोंवम
दम दिथ प्राणन होंवुम पान

('संजीवनी'– पृ०-70-71)

भाई जी योग साधक भी है। योगाभ्यास के विविध अनुभवों को काव्य के ताने–बाने में प्रस्तुत करके वस्तुतः वे अपनी रचनाओं की दार्शनिक गहराई का हमें एहसास कराते हैं। पतंजलि ऋषिकृत योगशास्त्र में चिन्तवृन्ति के निरोध का विशद विवेचन हुआ है।यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि का इसमें विस्तार के साथ वर्णन किया गया यही अष्टांग योग हैं। हठयोग, योग का एक भेद है जिसमें साधना के विभिन्न व्यवहार हठ पूर्वक अपना कर चिन्तवृन्ति को बाह्रय विषयों से छुटाकर अन्तंर्मुख करते है। कुंडलिनी शक्ति मूलाधार चक्र में स्थिति एक शक्ति है जिसे तंत्र और हठयोग का साधक जगाकर ब्रहमरंन्ध्र में लगाने का यत्न करता हैं। भाई जी के साधनात्मक जीवन की प्राथमिक आवश्यकताएँ हैं। मुझ जैसे सामान्य जीव की बुद्धि और सोच के बाहर। ये तो दर्शन की रहस्यात्मक ग्रन्थियाँ जिन्हें भाई जी समान कोई सिद्ध पुरूष ही सुलझा सकता है योगाभ्यास की महान क्षमतायों को रेखांकित करते हुए भाई जी लिखते हैः–

'वुज़नाव शक्ती कोंड्डुलनी
इडा तुॅ पिंगला गछिनऽन्यी
पतुॅ सुषमणा कड़ रवऽन्यि खऽन्यि
ग्वरुॅ दीव नखिडखि छुम पनुन।
अष्टांग चडकुॅरस मँज़ अऽचिथ
वाऽरांग मनुॅसर बेहु रवऽटिथं
दमरठतुॅ यिनुॅ न्येरख फडटिथ
ग्वरुॅ दीव नखिडखि छुम पनुन।

आधार ब्रहमुक ओमकार नाद
तऽथ्य छेपि लगान यूगी तुॅ साद
ब्रहम रन्ध्रुॅ न्येरान नागुॅराद
ग्वरुॅ दीप नखि डखि छुम पनुन।'

('संजीवनी'–पृ०–204-205)

एक योगी और तत्व चिन्तक के साधनात्मक जीवन की विभिन्न क्रियाओं का उल्लेख करते हुए भाई जी अपने अनुभूत सत्य को कहीं को कहीं स्पष्ट शब्दों में और कहीं संकेतों के माध यम से ज़ाहिर कर देते हैं। यह केवल किताबी ज्ञान नहीं है जो वास्तव में उधार ली हुई सम्पति है। यह तो उनके निजी अनुभवों का प्रतिफलन हैं। वे जिन रूहानी तजुर्बो की गर्दिश (कालचक्र) से गुजर रहे है वही तजुर्बे व्यक्त होने के लिए उनके हिया को बेक़रार कर देते है। फलतः मस्तमौला कवि ग़रीब बिना किसी रोक–टोक के पुकार उठता हैः–

स्तुॅकिस यन्द्रस पन येल्यि खोंरूम
अपुॅज्युक गंड़ मुचुॅरावुम तान्य
चक्रस मंज़ पाना नचुॅनोवुम
दुर्माद्रिथ प्राणन होवुम पान
यूगुॅ के मन्थुॅरुॅ पान हयोरं खोरूम
रसुॅ रसुॅ अत्यि ठहरोवुम पान
तपुॅ ऋषिनुय सूॅत्य ज़ान करुॅनोंवुम
दम दिथ प्राणन होवुम पान।
दयि सुॅन्जि लयि सूॅत्य हेयस होश थोवुम
ओम के कोम्बुॅ अबुॅसोंवुम पान
गम गोंसु त्राऽविंथ पान लोचुॅरोवुम

दम दिथ प्राणन होंवुम पान।'

('संजीवनी'–पृ० 70-71)

'संन्त' शब्द का शाब्दिक अर्थ है– बुद्धिमान, पवित्रात्मा, और परोपकारी। तीनों ही गुण हमें भाई जी के व्यक्तित्व में एक साथ दिखने को मिलते हैं। अत्यन्त शान्त स्वभाव के परोपकारी संत जो **संजीवनी** के माध्यम से अपनी बौद्धिक सम्पन्नता और चिन्तन की परिपक्वता का बोध कराते है। उन के भक्ति काव्य का वैवारिक पक्ष पर्याप्त सम्पन्न है। वे स्वयं संत होने के साथ–साथ एक बुद्धिजीवी भी है और चिन्तन को तर्क की तुला पर तौलकर अनुभूति के सहारे अर्थात कविता के माध्यम से ह्दय ग्राहय बना देते हैं।

भक्ति में आत्मा निवेदन का अपना विशेष स्थान एवं महत्व हैं। दास्य भाव की भक्ति में जीव ईष्ट के सम्मुख पूर्ण सम्पर्ण करके केवल ईशानुग्रह हेतु प्रतीक्षारत रहता है। उसे जब अपनी असमर्थता एवं किंकर्त व्यविमूढ़ अवस्था का एहसास सताने लगता है तो वह भौतिक पाशों से मुक्त होने के लिए व्याकुल हो जाता है और इसी व्याकुल विह्वल मन के साथ वह ईश दरबार में अपनी भावना पेश करता है। उसे अपने इष्ट देव पर अटल विश्वास है, वही भँवर में हिचकोले खाती डोलती नैया को पार लगा देगें, गहन तमसान्धकार को प्रकाश की अदभुत किरणों से ज्योतिर्मय बना देंगे। वेचाहें तो 'हमारे पीतल को सोने में बदल देगें'। पण्डित कृष्ण जू राजदान के शब्दों में:–

'यछ़ि चानि दानऽदानऽ ववि सोनऽ शीनऽ मानि
हां गोसानि सानि सरतलि करतऽ सोन।
नंगऽ छुस लोगमुत मंज़ प्यंवऽवुनि शानि

ज़गऽ छम नऽ क्यथ पाऽठ पकड मंज़िलस
अंग हीनस म्यश्रान कर नाव गंगऽ वानि
हा गोसानि सानि सरतलि करतऽ सोन।'

'कुलयाति कृष्णराम जू राजदान'
सम्पादकः सोमनाथ वीर–पृ०–254

संजीवनी की कई लीलाओं में भी भक्त अत्यन्त विनीत भाव से इष्ट कृपा के हेंतु यौं प्रार्थनारत दिखाई देता हैः–

'चुॅ यिखना सोन ताल्युन म्योन फोंलिहे
अकी नज़रे म्यें यऽचुॅकोल दोद बलिहे।
म्यैं वरकोन अजुॅलसुॅय कर ताम गोमुत
बुॅ परछ्योन अनिघऽटिस मँज़ छुस सोत्योमुत।
दमा अख कड तुॅ फुरसथ बेहु तुॅ सान्ये
बुॅ भावय बीनुॅ बीनय कर्मलान्ये।
दपय सम्साऽरय लूकव क्या म्य कोरुॅहम
अलाव गोंडुॅ हम तुॅ ती ती पानुॅ वोनुहम।
ह्यडुनं गेलुन म्य लूकन हुन्द करयमक्या
चुॅ राऽज़ी रोज़तम त्यलि छुस शहनशाह।

('संजीवनी'–पृ०–236-237)

जब निरन्तर प्रतीक्षारत रहने के बावजूद भी भक्त ईश कृपा से वंचित रहता है तो अत्यतं निराशावस्था में वह आत्म मंथन की ओर उन्मुख हो जाता है उसे लग रहा है कि अभी भी उसके भीतर काम, क्रोध,लोभ, और मोहरूपी अजगर कुन्डली मार कर विराजमान है। संसारिक आर्कर्षण अर्थात राग के अतिरिक्त अंहकार एवं ईर्ष्या ने आज भी उसके मानस को मलिन कर दिया है ! उसे लग रहा है कि वह असहाय है, बेबस

है, विवश है, पराधीन है, भ्रमित है और पथभ्रष्ट। एसी अवस्था में तो केवल पराशक्ति (Transcendental Power) ही उसका उद्धार कर सकती हैं। वह ईश शरण में आकर खून के आँसू बहाते हुऐ दिव्य दृष्टि के हेतु इस प्रकार याचना करता हैं। उसके मानस की सारी पीड़ा, व्यथा, हीनत्व बोध, परवशता एवं नश्वरता का एहसास उसके आत्म निवेदन को जोरदार और जानदार बना देंता है। उसके कथन में व्यापत दीनता और हीनता का भाव दिखते ही बनता है:–

'फुॅतु फुॅतु गोमुत वुछुतम पानस
नज़रा करतम हे
तापुॅ वुडुर मंच़ सेंकि माऽदानस
साया थवतम हे।
काडल्य मरून छुम पायस प्यमुॅह्य
छ़टु–छटु मा करुॅ हा
कामुॅ जिसिस मंज़ त्येलि कवुॅ फटुॅहा
नज़रा करतम हे।
ओंगनुय आऽसिथ दोंगुॅन्यार पुँठुगोम
मंज़ व्यवुॅहारस दुयतुक त्योंल प्योम
त्रुॅशनायि क्रुॅ प्योम जाहुरुॅय तेल्योम
नज़रा करतम हे।'

'संजीवनी' के अन्त में 'सोऽदाम चरित्र' शीर्षक से दो मित्रों की पौराणिक कथा को कवि ने कश्मीरी कविता की वच़न शैली में प्रस्तुत किया हैं। इस लम्बी कविता के 96 बन्द है और हर बन्द की अन्तिम पंक्ति 'भक्ति बोद्ध कोछि तस ललुॅवानो'। दोहराई जाती हैं। स्वामी परमानन्द द्वारा लिखित 'सुदामा चरित्र' मे 'जय जय जय देवकीनन्दनै' पंक्ति हर बन्द को महिमामंडित कर देती हैं।

इस पौराणिक कथा में वस्तुतः सोऽदाम देखा जाय तो प्रत्येक जीवात्मा है जो निजी स्वार्थो की स्वर्ण श्रृखलाओं मे बन्धा हुआ है।अपने सीमित क्षेत्र में रहकर हमारी नजर केवल निजी स्वार्थ की सीमायों के साथ टकरा करही लौट आती है। स्वार्थ सिद्धि के हेतु झूठ बोलना हमारा धर्म बन जाता है और स्वाँग भरना कर्तव्य दोनों कर्म निजी हित साधन एवं क्षणिक सुख प्राप्ति की भावना से प्रेरित हैं। जब तक इन भौतिक बन्धनों की सीमाओं को लाँघ कर असीम को जानने पहुचानने का प्रयत्न नहीं करेंगे तव तक यथार्थ बोध की स्थिति सम्भव नही है। कृष्ण के साथ मिलकर कृष्ण हो जाना तो दिव्यानुभूति है। गोकुल वासी बड़े भाग्यशाली थे कि इस रास मंडल मे रासबिहारी के संग लय होकर अलौकिक आन्नद के भागीदार बन गये। भाग्यहीन सुदामा को जब अपनी करनी का फल भुगताना पड़ता है तो मन ही मन पश्चाताप की अग्नि में जलकर कुन्दन हो जाता हैं। निश्छल रूप में जब वे अपने मित्र से मिलने आते हैं तो देखिये क्या स्वागत होता है दरिद्र ब्राहमण सुदामा का :–

'कृष्णस बासान सिंहासन चलानुँ
अऽशि दॅदुरायि ओंश न्येरानो
खोंर ननवाऽरी लारि लारि दोरानुं.
भक्ति बोंछि कोछि तस ललुँवानो।
डीशिथ कृष्णस सुदामा लारानुॅ
खोरन अथुँ छुस लागानो
कृष्णुँ भगवान छुस नालुँ मत्यि रटानुँ
भक्ति बोंछि कोछि तस ललुँवानो।
दोनुँवय लालुँ हत्य ओश कूत हारानुँ

दोनुँवय लालुँ हत्य ओश कूत हारानुँ
पछ़ छनुँ दोनुँवन्यि यिवानो
सोपनस मंज़ मां छुस कृष्ण डेंशानुँ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुँवानो।

('संजीवनी' – पृ०–365)

यही वास्तव में जीव और ब्रहम को पारस्परिक दिव्य मिलन है और इसके हेतु जीवंको भौतिक बन्धनों से ऊपर उठकर अध्यात्म की ऊँचाइयों को छुने के हेतु मन की समस्त मलिनता जलकर राख नहीं होती तब तक सब कुछ खोकर कुछ पाना सम्भव नही है। भाई जी प्रस्तुत लम्बी कथात्मक कविता के द्वारा अध्याय के रहस्यमय एवं घुमाउदार गलियारों से होते हुए दिव्यानन्द सम्पन्न उचभाव भूमि पर पहुँचाकर भक्तजनों को भी आगे बढ़ने के लिये प्रेरित करते है।

इसके अतिरिक्त 'गौरी स्तुति' एवं महाकवि पुष्पदन्त द्वारा रचित 'शिव महिम्ना स्तोत्र' को भी भाई जी ने संस्कृत भाषा के मूल पाठ के साथ प्रस्तुत करके कश्मीर काव्य रूप प्रदान किया हैं।

निष्कर्ष

अंत मे यह कहकर बात समाप्त करना चाहता हूँ कि अभी कुछ भी नही कहा है, कुछ भी नही लिखा हैं। बहुत कुछ कहना और लिखना शेष रह गया है। भाई जी का रचना संसार वस्तुतः उनके निजी अध्यात्म अनुभवों की उष्णता से जीवन्त होने का प्रमाण दे रहा है । यह कागद लेखी बात नहीं है अपितु मामला आँखिन देखी है यह वस्तुतः उनका अनुभूत सत्य है जिसे उन्होने अध्या़त्म की ऊचाइयों को छुते हुऐ वाणी प्रदान की है

संजीवनी में दिव्यानन्द की स्रोतस्विनी प्रवाहित हैं। किनारे पर बैठ कर मौजों का नज़ारा देखना ही पर्याप्त नहीं है तनिक डूब जाइये गहराइयों में आप अवश्य मौक्तिक कण पा लेंगे। भाई जी बराबर हमें निमंत्रण दे रहे है और हम मन्द बुद्धि जीव अनसुनी कहकर मामला टाल देते है यही हमारा दुर्भाग्य हैं। हमारा दाहिना हाथ बायें हाथ को ठगने के फिराक में रहता हैं। हम संन्सारी है, व्यवहारी है, व्यापारी है और न जाने क्या क्या! मगर सब कुछ होते हुए भी हम जौहरी नही बन सके वे जिन्हें खरे और खोंटे की समझ है। इस समझ को पाने के हेतु साधना के पथ पर निरन्तर अभ्यासरत रहना परम आवश्यक है।
लल्लेश्वरी के शब्दों में:–

दमऽ दमऽ कोरमस दमन आले
प्रज़ल्योम दीप तय ननेयम जाथ
अन्दरयुम प्रकाश न्यबर छो़टुम
गटि रोटुम तय करऽमस थफ ।

'ललदयद'–नोव एडीशन
प्रो०जियालाल कौल–पृ०–136

सवाल एक नही अनेक है लकिन बात एक ही है जिसको जितनी द्रुतगति से हम समझे, ग्रहण करें, चिन्तन के आधार पर विचार करें और तर्क की तुला पर तौलें उतना ही हमारे लिए श्रेयस्कर होगा। भाई जी के शब्दो में:–

'दारि बर त्रोपरिथ यल्यि छुस सुमराण
तेलि छुस सुमरान चोनुय नाव
अर्पण हमसू सुँय मँज़ छिम प्राण
त्यलि छुस सुमरान चोनुय नाव।

यख छुस लोगुमुत धर्मस तुँ कर्मस
अधर्मस मंज़ मन यीरान छुम
अऽती बुँ सरुँदान अऽती बुँगरुँमान
त्यलि छुस सुमरान चोनुय नाव।
सोपुँनस मँज़ जाग्रत वुजुँनावान
सम्सार ताप दुँन्यिरावान छिस
संसार कोलि पाप पोन्य यीरु, त्रावान
त्यलि छुस सुमरान चोनुय नाव।
दारि बर त्रोपरिथ यल्यि छुस सुमरान।'

('संजीवनी'–पृ०232-233)